3

मन जीतें बच्चों का

अक्षय कुमार दीक्षित*

एक दिन मैं अपनी कक्षा के बच्चों से बातचीत कर रहा था जिसमें किसी दूसरे स्कूल का ज़िक्र होने लगा। एक बच्चे ने बताया, "सर, कल उस स्कूल में बहुत हंगामा हो रहा था।"

एक दूसरे बच्चे ने कहा, "सर, वहाँ के बच्चे बिना बात दूसरों से लड़ते रहते हैं।"

यह सुनकर मुझे प्रतिक्रिया देने में कुछ समय लगा।

आप जानते हैं कि ऊपर बताईं गईं बातें किसी एक स्कूल तक सीमित नहीं हैं। बहुत से लोग इस घटना को स्कूलों में बढ़ती अनुशासनहीनता और उद्दंडता से जोड़कर देखेंगे। चाहे अभिभावक हों या शिक्षक, सभी की चिंता और जिज्ञासा यह जानने में है कि इस स्थिति का कारण और निवारण क्या है?

इस प्रश्न का उत्तर मेरे सामने उस दिन स्पष्ट हो गया जब मेरी कक्षा के बच्चों ने उस स्कूल के बारे में बताया था और वे मेरी प्रतिक्रिया के इंतज़ार में! मेरी ओर देख रहे थे, मैंने कहा, "जानते हो, उन बच्चों ने कल ऐसी हरकतें क्यों की? क्योंकि, शायद उन बच्चों को कभी प्यार नहीं मिला, न घर में, न स्कूल में।"

कक्षा में पूरी शांति छा गई। प्रत्येक बच्चे के चेहरे से पता चल रहा था कि वे इस बात का अर्थ और गंभीरता को पूरी तरह समझ रहे हैं। शायद उन्हें अपने जीवन के अच्छे बुरे अनुभव याद आ रहे होंगे या वे स्वयं को उस स्कूल के बच्चों की स्थिति में रखकर कल्पना कर रहे होंगे।

नि:संदेह, बच्चों और 'बड़ों' के बीच के द्वंद्व को और दूरी को समाप्त करने का सबसे प्रभावशाली तरीका यही है कि वे बच्चों के साथ स्नेह और प्यार भरा व्यवहार करें। कई स्थितियाँ ऐसी भी आती हैं जब 'बड़े' अपना आपा खो बैठते हैं और कभी अनुशासन के नाम पर या कभी न्याय के नाम पर ऐसा कुछ कर बैठते हैं जो उन्हें बच्चों से दूर कर देता है।

बच्चे उस व्यक्ति के लिए कुछ भी कर सकते हैं, जो उन्हें प्यार करता है। वे ऐसा कोई काम करने से पहले हज़ार बार सोचेंगें जिसके कारण उन्हें उस प्यार से वंचित होने की संभावना हो। अनुशासन, गृहकार्य, हिंसा, अभद्रता, सफ़ाई आदि अनेक समस्याएँ चुटकी बजाते ही छूमंतर हो जाएँगी। पर यह बात जितनी सरल और आसान लगती है, उतनी है नहीं, पहले तो इस बात को समझना ज़रूरी है कि 'बड़े' बच्चों को इस बात का एहसास कैसे करवाएँ कि वे बच्चों से प्यार करते हैं?

* *शिक्षा सलाहकार,* सी-633, जे.वी.टी.एस. गार्डन, छत्तरपुर एक्सटेंशन नयी दिल्ली-110074

आप अनेक तरीकों से प्रकट कर सकते हैं कि आप बच्चों से प्यार करते हैं। इसी का एक रूप है 'सम्मान करना'। जब आप बच्चों की इच्छाओं, विचारों, भावनाओं और ज़रूरतों का सम्मान करते हैं, तब बच्चे भी ऐसा ही करने के लिए प्रेरित होते हैं। सम्मान का भाव छोटी-छोटी बातों से भी संप्रेषित किया जा सकता है, जैसे – बच्चों को 'आप' या 'जी' कहकर पुकारना। जब बच्चे 'बड़ों' को 'आप' और 'जी' कहकर पुकार सकते हैं तो बड़े भी ऐसा क्यों नहीं कर सकते? इससे यह भी ज़ाहिर होता है कि वे बच्चों को एक सोचने-समझने वाला व्यक्ति मानते हैं न कि कोई खाली घड़ा। कक्षा में जब समानता होगी तो बच्चे खुलकर अपने विचारों को अभिव्यक्त करेंगे और दूसरों के विचारों को सम्मान देंगे। समानता भी 'प्यार'का एक महत्वपूर्ण अंग है।

समानता का अर्थ यह भी है कि शिक्षक कक्षा के रोज़मर्रा के कार्यों और फ़ैसलों में बच्चों की राय और सुझावों को शामिल करें। कौन-सा चार्ट कहाँ ज़्यादा अच्छा लगेगा, कब कौन सी कविता गाएँ, बालसभा या समारोह में क्या प्रस्तुत करें, इन सभी बातों में बच्चों की सलाह लें और उन पर अमल करें। जब बच्चों को यह अनुभव होगा कि आप उनकी राय का सम्मान कर रहे हैं तो उनके आत्मसम्मान में वृद्धि होगी। समानता केवल बच्चों और अध्यापक के बीच ही नहीं बल्कि बच्चों के बीच भी रहनी चाहिए। कई बार 'बड़े' बच्चों के साथ व्यवहार करते हुए अनजाने में पूर्वाग्रहों से ग्रस्त हो जाते हैं। उदाहरण के लिए, 'होशियार' बच्चों से बात करते हुए उनका स्तर विनम्र, स्नेहपूर्ण और 'कम होशियार' बच्चों के प्रति शुष्क हो जाता है। दूसरी ओर, पृष्ठभूमि के आधार पर भी कभी-कभी मन में पूर्वाग्रह आ सकते हैं। हमें इन बातों के प्रति सतर्क रह कर प्रत्येक बच्चे के साथ समान व्यवहार करना चाहिए।

बच्चों में ज़िम्मेदारी का भाव व अहसास हम बच्चों की राय लेकर भी करा सकते हैं।

विद्यालय में कौन सी प्रार्थनाएँ करवाएँ? कौन सी गतिविधियाँ करवाएँ? किस विषय पर पत्र/निबंध लिखवाएँ? कहाँ भ्रमण के लिए जाएँ?

बच्चों के उत्तरदायित्वपूर्ण व्यवहार को पुष्ट करने का एक महत्वपूर्ण तरीका है उन पर विश्वास करना और कक्षा-विद्यालय के क्रियाकलापों का उत्तरदायित्व उन्हें सौंप देना। यह कार्य सदन व्यवस्था द्वारा या कक्षा में समूह बनाकर या विशेष क्लबों की स्थापना द्वारा किया जा सकता है। जब बच्चे स्वयं विद्यालय-कक्षा में सफ़ाई, अनुशासन, व्यवस्था तथा संपदा की देखभाल करेंगे तो उनमें विद्यालय तथा कक्षा के प्रति अपनेपन की भावना का विकास होगा। समूह में कार्य करने से उन्हें एक-दूसरे से सीखने और सिखाने के भी भरपूर अवसर मिलेंगे। बच्चे सामग्री निर्माण के कार्य में भी शिक्षकों के साथ मिलकर कार्य कर सकते हैं। खेल प्रतियोगिताएँ, पुस्तकालय संचालन, कक्षा पुस्तकालय की स्थापना, पाठ्यचर्या पर आधारित कंप्यूटर कार्यक्रमों का निर्माण आदि अनेक कार्य ऐसे हैं जो बच्चे और बड़े मिलकर कर सकते हैं।

शिक्षक को बच्चों की क्षमताओं पर भी विश्वास रखना चाहिए। उनके सामने बहुत आसान लक्ष्य या

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 17 28-12-2015 AM 11:56:46

चुनौतियाँ रखना उनके लिए हानिकारक साबित हो सकता है। उनको चुनौतिपूर्ण कार्यों को पूरा करने के लिए अनूठे तरीके खोजने का अवसर दें। उनके प्रयास की सराहना करें।

सराहना! यह है अपनापन जताने का एक और तरीका। सराहना सबको अच्छी लगती है, चाहे छोटे हों या बड़े। बच्चों की अच्छी आदतों और कार्यों की सराहना से उस प्रकार के व्यवहार को बल मिलता है।

यह भी ध्यान देने की बात है कि बच्चों का अवलोकन अत्यंत पैना होता है। अत: उनकी झूठी प्रशंसा करने का प्रयास न करें। झूठी प्रशंसा करने पर बच्चों की दृष्टि में आपकी प्रशंसा का महत्त्व कम हो जाएगा। इसी प्रकार, झूठी धमकियाँ देने का भी प्रयास न करें।

बच्चों की रुचि को ध्यान में रखते हुए क्रियाकलाप सोचें और करवाएँ। जिन कामों में बच्चों की रुचि नहीं होगी, उनको वे बेमन से करेंगे और भावात्मक रूप से कक्षा से कट जाएँगे।

बच्चों से बातचीत अवश्य करें। बातचीत बच्चों के जीवन में झाँकने की खिड़की है। बच्चों से बातचीत करके आप उनकी कठिनाइयों, रोज़मर्रा की चुनौतियों और सोच को समझ सकेंगे और उनके अनुसार अपने क्रियाकलापों को ढाल सकेंगे। बातचीत बच्चों और अध्यापक के अपनेपन को बढ़ाने का काम भी करती है। बातचीत का विषय कुछ भी हो सकता है। बातचीत को शैक्षिक जामा पहनाने का कृत्रिम प्रयास न करें।

कक्षा के लिए बच्चों द्वारा 'मूल-नियम' बनवाएँ। उदाहरण के लिए, एक बार में एक बच्चा बाहर जाएगा, कक्षा के सामान की देखभाल की ड्यूटी आदि। जब बच्चे इन नियमों को स्वयं बनाएँगे तो उन पर स्वयं अमल भी करेंगे क्योंकि ये नियम उन पर बाहर से थोपे नहीं गए हैं। इन नियमों को चार्ट पर लिखकर कक्षा में लगा दें। स्वयं भी इन नियमों का पालन करें।

दिन की शुरुआत किसी रोचक बात, काम या वस्तु से करें। कक्षा में एक जगह बैठने के बजाए ऐसी जगह खड़े हों ताकि प्रत्येक बच्चा आपको देख सके। जब बच्चे कुछ कार्य कर रहे हों तो सक्रिय रहें। हर बच्चे या समूह के पास जाएँ। हर बच्चे से नज़र मिलाकर बात करें।

बच्चे उन अध्यापकों के प्रति श्रद्धा रखते हैं जो उन्हें अपनी पूर्ण क्षमता से पढ़ाते हैं। अध्यापक बच्चों के दिलों में अपने लिए श्रद्धा और विश्वास उत्पन्न कर सकते हैं यदि वे समयबद्ध हैं, उन्हें अपने विषय की पर्याप्त जानकारी है, उनके व्यवहार में लचीलापन और आत्म नियंत्रण है। कक्षा के भौतिक वातावरण का प्रभाव भी बच्चों के व्यवहार पर पड़ता है। कक्षा में सफ़ाई, हवा, प्रकाश और बैठने की व्यवस्था पर नज़र रखें।

बच्चों के साथ हँसें, मुस्कराएँ। बच्चों को ऐसे अध्यापक अधिक अच्छे लगते हैं जो उनके साथ हँसते हैं, मुस्कराकर बात करते हैं। परंतु बच्चों के ऊपर कभी न हँसें, उनका मज़ाक कभी न उड़ाएँ।

एक बार एक अध्यापिका को कुछ महीनों के लिए अवकाश पर जाना पड़ा। उन दिनों मैंने अपनी कक्षा के साथ-साथ उस कक्षा को भी पढ़ाया। जब वे अध्यापिका लौटीं तो उनकी कक्षा भी उनके पास लौट गई। उन्होंने अपनी कक्षा से, पूछा "सर कैसा

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 18 28-12-2015 AM 11:56:46

पढ़ाते हैं?" सारे बच्चे बोले, 'बहुत अच्छा।' फिर उन्होंने पूछा, "सर की कौन सी बात तुम्हें सबसे अच्छी लगी?" सबसे पहले जिस लड़की ने उत्तर दिया, वह उत्तर दर्शाता है कि कौन सी विशेषता बच्चों को सबसे पहले आकर्षित करती है। उस लड़की जिसका नाम अंतिमा था, उसने कहा, "सर हँसाते बहुत हैं।"

❑❑❑

पहले दिन से आखिरी दिन तक समूची शिक्षा में बौद्धिक रोमांच का एक अहसास होना चाहिए यह समझ लेने का अहसास कि क्या कुछ एक पहेली है और क्या आहलादकारी और आनंदायक होता है हर अच्छे शिक्षक में यह सब सुलभ कराने की योग्यता होनी चाहिए।

बर्ट्रेंड रसेल

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 19 28-12-2015 AM 11:56:46